WORLD JOURNAL OF PHARMACEUTICAL RESEARCH
SJIF Impact Factor 8.084
Volume 9, Issue 4, 1893-1899. Review Article ISSN 2277– 7105

अष्टांग हृदय – रचना शारीर विषयक एक समीक्षात्मक अध्ययन

स्वाती[1], डा. आर. बी. शुक्ला[2], डा. अनूप कुमार गक्खड़[3] डा. नरेश चौधरी[4]

[1]एम0 डी0 तृतीय वर्ष, रचना शारीर स्नात्कोत्तर विभाग।

[2]प्रोफेसर, रचना शारीर स्नात्कोत्तर विभाग।

[3]परिसर निदेशक, ऋषिकुल कैम्पस हरिद्वार।

[4]प्रोफेसर, रचना शारीर स्नात्कोत्तर विभाग।

Article Received on
21 Feb. 2020,

Revised on 11 March 2020,
Accepted on 31 March 2020,

DOI: 10.20959/wjpr20204-17212

***Corresponding Author**
स्वाती
एम0 डी0 तृतीय वर्ष, रचना शारीर स्नात्कोत्तर विभाग।

ABSTRACT

श्रीमद् वाग्भट्ट द्वारा रचित अष्टांग हृदय को वृहत्त्रयी में रखा गया है। इस संग्रह में अष्टांग आयुर्वेद का विस्तृत रुप से वर्णन किया गया है। इस अष्टांग हृदय का निर्माण सभी शास्त्रों के उत्तम सार भाग को लेकर किया गया है। यह ग्रन्थ न अधिक विस्तृत है और न अधिक संक्षिप्त है। इस शोध प्रबंध में शरीर के महत्व को दृष्टिगत रखते हुए रचना शारीर विषयक शब्दों तथा श्लोकों का विस्तृत वर्णन किया गया है तथा इसमें विभिन्न आचार्यो के मतों का भी समावेश किया गया है। अष्टांग हृदय में स्थित पॉचों स्थानों से शरीर सम्बन्धित सभी विषयों का यहॉ पर अध्ययन एवं संकलन किया गया है। अष्टांग हृदय को आयुर्वेद का हृदय कहा गया है, उसी प्रकार इस ग्रन्थ के अध्ययन मात्र से ही सभी विषयों का अनायास ही ज्ञान प्राप्त हो जाता है। इस हेतु आधुनिक साहित्य तथा उपलब्ध आयुर्वेद साहित्य में वर्णित विषय वस्तु जैसे त्रिदोष स्थान, डिम्भ, गुदा, वस्ति आदि के वर्णन का अवलोकन किया गया है साथ ही अष्टांग हृदयगत वर्णित अरिष्ट लक्षण, तथा रचना शारीर से सम्बन्धित विषयों का विमर्श पूर्वक अध्ययन भी किया गया है।

KEYWORDS: अष्टांग हृदय, आयुर्वेद, रचना शारीर, वृहत्त्रयी।

INTRODUCTION

आयुर्वेद एक जीवन विज्ञान है। सम्पूर्ण सृष्टि में विभिन्न आकृतियाँ, अपने प्राकृत स्वरूप एंव संज्ञा में अवस्थित है; जो कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में पाई जाने वाली रचनाओं के द्योतक है। ये अपने स्वस्वरूप में रहकर अपने कार्यो का सम्पादन करती है। आयुर्वेद के उपलब्ध साहित्यों में वृहत्त्रयी को अधिक मान्यता दी गई है। जिसमें महर्षि वाग्भट्ट द्वारा रचित अष्टांग हृदय अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। अष्टांग हृदय के रचयिता श्रीमद् वाग्भट्टाचार्य है। जिनका काल विद्वानों द्वारा 7वीं शताब्दी माना गया है। अष्टांग हृदय के सम्बन्ध में विद्वानों का मत है कि इसके अध्ययन एंव अध्यापन से चिकित्सा कार्य में पूर्णता आती है। तथा व्याधि निवारण में सुगमता होती है।

तेभ्योऽतिविप्रकीर्णेभ्यः प्रायः सारतरोच्चयः।
क्रियतेऽष्टांगहृद्धयं नातिसंक्षेपविस्तरम्।।

(अ0ह0सू01/4)

अग्निवेश आदि के बनाये शास्त्र अतिशय विस्तृत एंव विषय बिखरे होने के कारण उन शास्त्रों में से उत्तम सार भाग लेकर सब अर्थो को एक साथ एकत्रित करने के लिए इस अष्टांग हृदय को बनाया गया है। यह अष्टांग हृदय न तो अतिशय संक्षिप्त और न अति विस्तृत है।

अतः अकेले इस ग्रन्थ के अध्ययन से आयुर्वेद के सभी अंगों तथा उपांगों का अनायास ही ज्ञान हो जाता है।

अष्टांग हृदय में सब विषयों (अष्टांग) का एक साथ उचित रूप से वर्णन किया गया है।

इसी से यह ग्रन्थ आयुर्वेद का हृदय कहा गया है।

इस ग्रन्थ में न केवल संहिताओं का संकलन मात्र है, बल्कि तत्कालीन प्रचलित आवश्यक नवीन तथ्यों का भी समावेश किया गया है। जिस कारण यह ग्रन्थ स्वल्प काल में ही लोकप्रिय हो गया; और इस ग्रन्थ को बृहत्त्रयी में चरक और सुश्रुत के समकक्ष स्थान प्राप्त हुआ।

AIMS AND OBJECTIVES

- चिकित्सा विज्ञान में शरीर के महत्व को दृष्टिगत रखते हुऐ, अष्टांग हृदय में वर्णित रचना शारीर की प्रमाणिकता एंव व्यवहारिकता का प्रतिपादन करना।
- महर्षि चरक और आचार्य सुश्रुत के पश्चात आयुर्वेद में रचना शारीर की स्थिति, प्रमाणिकता का अवलोकन।
- वर्तमान ज्ञान में शारीर सम्बन्धी विशिष्ट विषयों का अवलोकन।

REVIEW OF LITERATURE

वायु के स्थान– पक्वाशय, कमर, सक्थि, श्रोत्र, अस्थि तथा त्वचा वात के स्थान बताऐं गए है; इन सब में पक्वाशय श्रेष्ठ है।[7]

पित्त के स्थान– नाभि, आमाशय, स्वेद, लसीका, रक्त, रस, नेत्र, तथा त्वचा । इन सभी में नाभि पित्त का मुख्य स्थान है।[8]

कफ के स्थान– छाती, कण्ठ, सिर, क्लोम, संधियॉ, आमाशय, रस, मेद, नासिका, जीभ ये कफ के स्थान है। तथापि इन सभी में छाती को कफ का विशेष स्थान कहा गया है।[9]

षडंग– आ0 वाग्भट्ट ने शरीर को 6 अवयवों में विभाजित किया है। यथा – शिर, अन्तराधि, दो बाहु, तथा दो टांगे। इन 6 अवयवों वाले शरीर के ऑख, हृदय आदि प्रत्यंग है। अतः आगे इस संहिता का व्याख्यान षडंगों के अनुसार किया जाऐगा।[10]

कोष्ठांग– कोष्ठांग में स्थित अंगों में से हृदय, क्लोम, फुफ्फुस, यकृत, प्लीहा, उण्डुक, दोनों वृक्क, नाभि, डिम्भ, आंत्र तथा बस्ति है।[11]

शिर तथा बस्ति में अरिष्ट लक्षण– जिस व्यक्ति के माथे में या बस्ति प्रदेश में बिना कारण नई सिराराजी या दूज के चांद या कुटिल आकार का दिखता है;वह पुरुष 6 मास से अधिक नहीं जीता है।[3]

अकारण नासिका न कुरेदें– नाक को न कुरेदे।[12]

गुद– स्थूलआंत्र से सम्बद्ध रखते हुए साढे चार अंगुल परिमाण में गुदा होती है। इसमें 3 वलियॉ होती है। प्रत्येक वलियॉ डेढ अंगुल परिमाण की होती है। सबसे भीतर की वलि प्रवाहिणी है, उसके बाद बाहर की तरफ विसर्जनी तथा सबसे बाहर संवरणी होती है। संवरणी वली के बाद 1 अंगुल भाग में गुदौष्ठ होता है। गुदौष्ठ का परिमाण डेढ यव है। तथा इस गुदौष्ठ के बाहर गुदा पर रोम होते हैं।[13]

ग्रहणी– अग्नि का आधार तथा अन्न का ग्रहण करने से ग्रहणी कहलाती है; यही ग्रहणी धन्वन्तरी के मत से पित्तधरा कला है । यही आयु की, आरोग्य की, वीर्यशक्ति की, ओज की, पंचमहाभूताग्नि की तथा सात धात्वाग्नि की पुष्टि के लिए होती है। आयु आदि इस अग्नि से पुष्ट होते है। यह ग्रहणी पक्वाशय द्वार पर भोजन के मार्ग की अर्गला की भॉति स्थित है।[14]

बस्ति– वस्ति अधोमुख होने पर भी मूत्रवाही सिराओं के द्वारा पार्श्वो से भर जाती हैं । मूत्र को ले जाने वाले सूक्ष्म स्रोतों द्वारा निंरतर वस्ति भरी जाती है; इन्हीं मूत्र स्रोतों के मार्ग से दोष बस्ति में पहुॅच कर वस्ति मार्ग में आश्रित होकर 20 प्रकार के मूत्राघात तथा प्रमेहों को उत्पन्न करता है।[15]

धमनी का नाभि से सम्बद्ध– शरीर में 24 धमनियां नाभि से सम्बन्धित है। इन धमनियों से नाभि इस प्रकार घिरी रहती है, जिस प्रकार पहिये की नाभि आरों से घिरी रहती है। इन धमनियों से यह शरीर के ऊपर, नीचे तथा तिर्यग रुप में भ्रमण करता है।

शिर की चिकित्सा– विद्वान लोग शिर को शरीर ऊर्ध्व स्थित मूल तथा अधः शाखा वाला कहते हैं। इसलिये मूल में प्रहार करने वाले रोगों को अतिशीघ्र जीतना चाहिये।

OBSERVATION & DISCUSSION

वात के स्थान – पक्वाशय– श्रोणि एवं गुद भाग से ऊपर का तथा नाभि से नीचे को जो भाग है, वह पक्वाशय है; जो वात का प्रमुख स्थान है। जिसे वृहदन्त्र भी कहते है। आधुनिक विज्ञान में इसे Large intestine or colon कहा जाता है। It is about one and half metres long. The main subdivisions of the large intestine are cacum, ascending colon, transverse colon, descending colon, sigmoid colon, rectum and the anal canal.Role of vit B complex is to maintain intestinal flora viz dominacy of *vata* to absorb Nacl, sodium chloride. In other word it may also called *katu avastha paka*.

कटी– कटी शब्द से शरीर के अधोभाग का ग्रहण होता है, जिसे सामान्य भाषा में कमर का वाचक है । इसे Loin या Waist भी कहा जाता है। छाती तथा नितम्ब के बीच के पतले भाग को कटि कहते है। **सक्थि–** सक्थि शब्द से अधःशाखा का बोध होता है। जिसके उरु, जंघा तथा पाद ऐसे 3 भाग होते हैं। जिसे Lower limbs के नाम से भी जाना जाता है, यह भी वात का स्थान बताया है। जिसमें मुख्यतः femoral nerve , obtruator nerve, sciatic nerve का inervation होता है; जो lumbar, sacral and coccycial plexus से derived होती है। सम्भवतया इसे वात का स्थान कहा गया है। **श्रोत्र–** जिसे कर्ण भी कहते हैं। यह एक इन्द्रियाधिष्ठान है। जिसका कार्य शब्द ग्रहण

करना है। आधुनिक विज्ञान में इसे Ear की संज्ञा दी गई है। जिसके 3 भाग होते है; जिसे organ of hearing के नाम से भी जाना जाता है। It is also concerned in maintaining the equilibrium of the body. यह भी वात का स्थान है, जिस कारण कर्णपूरण का विधान भी इंगित है। **अस्थि**– अस्थि सप्तधातु के अर्न्तगत आती है, जो पृथ्वी महाभूत प्रधान होती है। यह शरीर को आधार एंव स्वरुप प्रदान करती । अस्थि धातु की उत्पत्ति केदारी कुल्या न्याय के द्वारा मेद धातु से उत्पन्न होती है; जिसका मल नख, केश आदि होते है, जिसे Bone भी कहा जाता है। **स्पर्शनेन्द्रिय–** इसे त्वचा भी कहा जाता है। यह एक इन्द्रिय भी है। यह वायु महाभूत प्रधान इन्द्रिय होती है, जिसका कार्य स्पर्श या Sense of touch है। आर्युवेद मे षड / सप्त त्वचा का वर्णन मिलता है, जिसकी उत्पत्ति क्षीर संतानिका की भांति होती हैं। जिसे आधुनिक विज्ञान में इसे Skin की संज्ञा दी गई है।

पित्त के स्थान– **नाभि**– नाभि को पित्त का प्रमुख स्थान माना गया है। किंतु यहॉ पर पित्त के प्रकरण में नाभि को क्षुद्रांत्र लिया जा सकता है, क्योंकि देहामपक्वस्थानानां मध्ये सर्वसिराश्रयः नाभिः अर्थात् यह नाभि आमाशय से लेकर पक्वाशय तक कहीं हो सकती है। इसे small intestine से compare किया जा सकता है।

आमाशय– नाभि से लेकर स्तन पर्यन्त जो महास्रोत का अंश है; वह आमाशय है। यह वह स्थान है, जहॉ पर आम तथा अपरिपक्व धातुवादि पाये जाते हैं। जिस पर अग्नि क्रिया के बाद में परिपाक होता है। आमाशय को पित्त का स्थान माना जाता है। इसे Stomach भी कहा जाता इसके अतिरिक्त स्वेद, रस, नेत्र, तथा त्वचा भी पित्त के स्थान बताये गये हैं।

कफ के स्थान– **कण्ठ**– इसे कफ का स्थान बताया गया है। वह स्थान जहॉ आहार का जाना कठिन हो गया हो, तथा जिसमें जिह्वा चली जा रही हो; वह Pharynx का द्योतक है। कण्ठ गर्दन के बाहरी भाग की ओर इंगित करता है। इसे Throat कहा जाता है। किंतु इस प्रसंग में कण्ठ को Pharynx से लिया गया है। सम्भवतया यहॉ पर pharynx से laryngopharynx लिया गया है। **शिर**– शिर को करोटि या ग्रीवारहित शिर (Skull), खोपडी या शिरः सम्पुट (Cranium) से लिया गया है। इसे भी कफ का स्थान बताया गया है। **क्लोम**– ऐसा अंग जो यकृत के नीचे हो तथा वृक्कौ के ऊपर हो तथा हृदय के दक्षिण भाग में हो। इसे डल्हण ने तिल की आकृति के सदृश बताया है; यह एक मांसपिण्ड है। इसे पारिषद्यं शब्दार्थ शारीरम् ने Pancreas से correlate किया है। पर्व को संधियों के जोड या Nodes or joints भी कहा जाता है। इसे भी कफ का स्थान बताया गया है। **घ्राण**– इसे नासिका कहते हैं। यह एक इन्द्रिय है, जिसका अधिष्ठान नासा है। इसे भी कफ का स्थान बताया गया है। इसे Nose or Olfactory area of the nose कहते हैं। **जिह्वा**– जिसे जीभ भी कहते हैं। यह एक इन्द्रियाधिष्ठान है। यह जल महाभूत प्रधान इन्द्रिय होती है, जिसका कार्य रस ग्रहण करना है; जिसका अर्थ शब्द है। आधुनिक विज्ञान में इसे Tongue की संज्ञा दी गई है। इसे भी कफ का स्थान बताया गया है।

कोष्ठांग– कोष्ठ के अंदर जो अंग प्रत्यंग होते हैं उन्हें कोष्ठांग या Viscera की संज्ञा दी गई है। वाग्भट्ट ने 12 कोष्ठांग बताये हैं। इनमें हृदय को Heart, क्लोम को Pancrease, फुफ्फुस को Lungs, यकृत को Liver, प्लीहा को Spleen, उण्डुक को Colon, वृक्कौ को Left and Right Kidney, नाभि को umbilical region, डिम्भ को Sigmoid colon, आंत्र को Intestine, बस्ति को bladder कहा गया है। **डिम्भ**–यह अष्टांग हृदय द्वारा उल्लिखित एक कोष्ठांग है। इसका स्पष्टीकरण करते हुए श्री अरुणदत्त जी ने अपनी सर्वांगसुंदराख्या टीका में लिखा है कि, यह

शकृत का आधार है, जो पुरीषाधार के अंर्तगत आता है। इसे Sigmoid colon कहा जा सकता है, क्योंकि यह पुरीष का संग्रह स्थल होता है।[1]

षडंग

अन्तराधि– वह भाग जिसमें उर तथा उदर दोनों होते हैं। जिसे धड या Trunk कहा जाता है। यह एक बहुत बडा रिक्त स्थान है। उर गुहा को Thoracic Cavity कहते हैं, तथा इसमें हृदय एंव फुफ्फुस रहते हैं। उदर गुहा को Abdomen कहते हैं; इसमें आमाशय जैसे अनेक विशिष्ट अवयव रहते हैं। उदर गुहा का निचला भाग श्रोणि या Pelvic Cavity कहलाता है।

शिरो – शिर प्रदेश को कहा गया है। इसे head कहा जाता है। इसके 2 भाग कहे गये हैं; ऊपर का भाग कपाल जिसे Cranium कहते हैं। यह 8 अस्थियों से बना हुआ है, इसी में मस्तिष्क रहता है। कपाल के नीचे का भाग आनन या Faceकहा जाता है। इसके मुख्य भाग– ऑख, नाक, कान, मुख तथा ठोडी है।

बाहू – ऊर्ध्व शाखा या बॉह। upper extremity or limb or brachium

सक्थिनि– अधः शाखा। lower limb

ललाटे तथा वस्तिशीर्ष में अरिष्ट लक्षण– Due to caput medusa, superficial epigastric vein distended and engorged, radiating from umbilicus and across the abdomen. It is sign of portal hypertension which caused by Liver cirrhosis.[18]

ललाट को यहॉ पर fore head से लिया गया है। In forehead frontal vein (no valve) begins venous Plexus, which communicate with frontal branches of superficial temporal vein . In nasal arch it join supraorbital vein from the angular vein and drains into facial vein. Facial vein drains into internal jugular vein. Due to obstruction of internal jugular vein or facial vein, frontal vein gets prominent on fore head.[6]

नासिका को अकराण कुरेदना – इससे Nasal cavity क्षति पहुॅचती है। Kiesselbach's plexus which is a vascular network of the septal ramus of the superior labial branch of the facial artery, branch of sphenopalatine artery and of anterior ethmoidal artery, that supply the nasal septum. The arteries anastomose to form the plexus which is a common site of bleeding from the nose (epistaxis). It lies in the anterior inferior part of the septum known as little's area.[6]

गुदा– $4^{1/2}$ अंगुल प्रमाण की गुदा होती है। इसमें 3 गुद वलियॉ डेढ–डेढ अंगुल के प्रमाण की होती है। जो कि शंख के आवर्त्त की तरह एक के ऊपर एक रहती है। इस का रंग हाथी के तालु के समान कुछ काला – लाल होता है। रोम प्रान्तों से गुदौष्ठ डेढ यव ऊपर होता है। इसे Rectum कहा जाता है। स्थूलान्त्र को बडी आंत्र या Large Intestine कहा गया है। प्रवाहिणी– गुदा की ऊर्ध्व गुदवलि प्रवाहिणी है। इसे 1Houston's fold or valve (Pelvirectal fold) भी कहा जाता है। विर्सजनी – गुदा की दूसरी या मध्यम वली। इसे 2 Houaton's fold or Valve भी कहते

हैं संवरणी– गुदा के नीचे की ओर की पहली गुदवलि को संवरणी कहा जाता है। इसे 3 Houston's fold or Valve भी कहते हैं। गुदौष्ठ– गुदा के बाह्य द्वार के चारों ओर जो रोमावली पाई जाती है; उससे 1 अंगुल हटकर गुदौष्ठ होता है। इसे Anal aperture कहा जाता है।

ग्रहणी– इसके सम्बंद्ध में आचार्य वाग्भट्ट ने उल्लेख किया है कि, ग्रहणी आमाशय से अन्न ग्रहण कर उसे पक्वाशयद्वार तक पचाने का कार्य करती है। इस प्रसंग में आ0 वाग्भट्ट ने क्षुद्रांत्र का सारा क्षेत्र ग्रहणी से लिया है। जिसमें पित्तधरा कला आमाशय तथा पक्वाशय के मध्य आश्रित होकर रहती है, जो ग्रहण, पचन, शोषण (Absorption) तथा मुंचन का कार्य करती है। पक्वाशयद्वार से तात्पर्य है जिसके माध्यम से क्षुद्रांत्र वृहदन्त्र से मिलता है। Ileocecal orifice or Splinter कहा गया है। यह पक्वाशय द्वार ही एक तरह की अर्गला है । यह बंद रहता है और खुलने पर उससे अंदर का पदार्थ बाहर आ जाता है।[5]

वस्ति स्वरुप – बस्ति का अधोमुख होने से तात्पर्य है; बस्ति का मुख नीचे की ओर होता है। आ.0 सुश्रुत ने निदान स्थान के तीसरे अध्याय में बताया है, नाभि, पृष्ठ, कटी, वृषण , गुदा, वंक्षण तथा लिंग इनके बीच में एक द्वार वाली पतले चर्म से बनी बस्ति होती है। यह स्वरुप में तोम्बी के समान होती है। तथा शिरा और स्नायुओं से घिरी हुई है। बस्ति को मूत्रसंचय का स्थान होने के कारण इसे मूत्राशय भी कहा जाता है। वस्ति से मूत्राशय या नाभि का अधो भाग का माना गया है। इसे Urinary bladder भी कहते है।

धमनी का नाभि से सम्बद्ध– धमनी को जीवसांक्षिणी भी कहा गया है। धमन्यात धमनी:; जिसमें धमन क्रिया होती है वह धमनी है। कई आचार्य जन्म से पूर्व धमनी को नाभिप्रभव माना है, तथा जन्म के पश्चात हृदय प्रभव। 24 धमनियों में से 10 ऊपर की ओर 10 नीचे की ओर तथा 4 तिर्यग रुप में गमन करती है। नाभि आरों से घिरी रहती है, इसे Portacaval anastomoses से Compare किया जा सकता है।

शिर की चिकित्सा– जिस प्रकार वृक्ष जड, तना तथा शाखाओं से स्थिर रहता है, तथा उसका पोषण भी होता है ठीक उसी प्रकार प्राणियों में ऊर्ध्व भाग में शिर को मूल कहा गया है, क्योंकि शिर में प्राणियों का प्राण तथा सम्पूर्ण इन्द्रियॉ रहती हैं और यह सभी अंगों में उत्तम अंग है; तथा शरीर को स्थिर रखता है। इसका वर्णन चरक सूत्र स्थान के कियन्तःशिरसियध्याय में किया गया है। तथा अधः शाखा से तात्पर्य सुषुम्ना काण्ड (Spinal cord) or सुषुम्ना नाडी (Spinal nerve) है। अतः मूल पर प्रहार करने से अर्थात चिकित्सा मानसिक रोगों को जीता जा सकता है। जैसे अपस्मार, उन्माद आदि।

CONCLUSION

प्रस्तुत विषय ''अष्टांग हृदय– रचना शारीर विषयक एक समीक्षात्मक अध्ययन'' के अर्न्तगत मेरे द्वारा सम्पूर्ण अष्टांग हृदय में वर्णित रचना शारीर से सम्बन्धित विषयों का गहन अध्ययन किया गया जिसके कुछ निष्कर्ष निम्नवत् हैं।

1. रचना शारीर से सम्बन्धित शब्दों का वर्णन तथा उनका आधुनिक परिपेक्ष्य में सम्बन्ध। यथा– वस्ति, गुदा आदि।
2. त्रिदोष के स्थानों का विस्तार–पूर्वक वर्णन।
3. इन्होनें अरिष्ट का वर्णन शारीर स्थान में किया है।
4. दिनचर्या के प्रकरण में वर्णित कतिपय रचनाओं का महत्व; यथा– अकारण नासिका न कुरेदे आदि।

REFERENCES

1. पारिषद्यं शब्दार्थ शारीरम, पं0 दामोदरशर्म्मा गौड। पेज न0 105.
2. सुश्रुतसंहिता ,आयुर्वेदतत्त्वसंदीपिका' हिन्दीव्याख्या वैज्ञानिकविमर्शोपेता, कविराज डॉ0 अम्बिकादत्तशास्त्री।
3. श्रीमद्वाग्भटविरचितम् अष्टांगहृदयम्, 'विद्योतिनी' भाषा टीका – वक्तव्य– परिशिष्टसहितम्, कविराज अत्रिदेव गुप्त शारीर स्थान 5/14.
4. श्रीमदग्निवेशेन प्रणीता चरकदृढबलाभ्यां प्रतिसंस्कृता चरक संहिता ,शारीर स्थान 6/19.
5. GRAY'S ANATOMY; Williams & Warwich, 36 edition, angiology, page no.739.
6. HUMAN ANATOMY; B D Chaurasia's, volume 3 (head and neck, brain) page no. 235.
7. श्रीमद्वाग्भटविरचितम् अष्टांगहृदयम् ,'विद्योतिनी' भाषा टीका –वक्तव्य– परिशिष्टसहितम्, कविराज अत्रिदेव गुप्त। (सू0 12/1).
8. अष्टांगहृदयम् कविराज अत्रिदेव सूत्र स्थान 12/2.
9. अष्टांगहृदयम्, कविराज अत्रिदेव गुप्त सूत्र स्थान 12/3.
10. अष्टांगहृदयम्, कविराज अत्रिदेव गुप्त शारीर स्थान 3/1.
11. अष्टांगहृदयम्, कविराज अत्रिदेव गुप्त सूत्र स्थान 3/22.
12. अष्टांगहृदयम्, कविराज अत्रिदेव गुप्त सूत्र स्थान 2/35.
13. अष्टांगहृदयम्, कविराज अत्रिदेव गुप्त निदान स्थान 7/5.
14. अष्टांगहृदयम्, कविराज अत्रिदेव गुप्त शारीर स्थान 3/51.
15. अष्टांगहृदयम्, कविराज अत्रिदेव गुप्त निदान स्थान 9/2.
16. अष्टांगहृदयम्, कविराज अत्रिदेव गुप्त शारीर स्थान 3/39.
17. अष्टांगहृदयम्, कविराज अत्रिदेव गुप्त उ0 तंत्र 24/58.
18. Taber's cyclopedic medical dictionary vol-1, page no.334.